

Gedichte (aber nicht im MBH.) AK. TRIK. 3, 2, 24. H. an. MED. YALĠ. सर्गीणामादिरत्तय मध्यं चैवाहम् sakt Kṛṣṇa BHAG. 10, 32 (*naturarum SCHL.*) R. GORR. 1, 4, 29. 7, 93, 10. — 14) = *विसर्ग* der am Ende von Wörtern erscheinende Hauch Verz. d. Oxf. H. 104, b, 38. fg. — सर्गेषु लोकेषु KATHOP. 6, 4 wohl fehlerhaft für स्वर्गेषु लो०. Vgl. अनिशित०, अदि०, गो०, त्रि०, प्रति०, भूत०, मन्त्र०, रुद्र०, सत्त्वं, सार्गिक.

सर्गक am Ende eines adj. comp. von सर्ग. विचित्रार्थसर्गक so v. a. her-
vorbringend SARVADARĢANAS. 49, 10.

सर्गकर्तृ m. Schöpfer: ब्रह्मन् MĀRK. P. 103, 13. Davon nom. abstr.
कर्तृत्वं PAÑKAR. 1, 1, 51.

सर्गकृत् m. dass. HARIV. 7020.

सर्गतक्त adj. im Schuss dahinfahrend RV. 3, 33, 4. 11.

सर्गप्रतक्त adj. hinschiessend, rennend RV. 1, 65, 6.

सर्गबन्ध m. eine Composition in Sarga (Kapiteln), ein episches Kunst-
gedicht: सर्गबन्धो मन्त्रकाव्यमुच्यते KĀVALD. 1, 14. 13. SĀH. D. 559. TRIK. 3, 2, 22. अ० adj. nicht in Kapitel eingetheilt: असर्गबन्धमपि यदुपकाव्य-
मुदीर्यते (z. B. Sūrjaçataka) PRATĀPAR. 19, a, 6.

सर्ग्य (von 3. सर्ज) adj. s. पाणि०.

1. सर्ज्, सर्जति knarren: शकटीरिव सर्जति RV. 10, 146, 3.

— उद्दु dass.: अन्नो यदुत्सर्जत् TS. 6, 2, 9, 1. ÇĀT. BR. 6, 8, 4, 10. 3, 5, 3, 17. तद्यथानः सुसमाहितमुत्सर्ज्यायात् 14, 7, 1, 42. TS. 5, 2, 3, 3.

— अयुद्दु knarren hin zu d. i. zum Schäden von (acc.): गृहान् TS. 6, 2, 9, 1.

2. सर्ज्, सर्जति erwerben (अर्जने) DHĀTUP. 7, 50. सर्जति धनं लोकः DUR-
GĀD. im ÇKDR.

3. सर्ज्, सर्जति (विसर्गे) DHĀTUP. 28, 121. सर्जतस् 2. du. AV. 5, 30, 5. सर्ज-
धम्, सर्जानः, ससर्ज, ससर्जय und सस्रष्ट P. 7, 2, 65. VOP. 8, 62. 77. 13, 4. (अव) समृज्यात्: समर्ज, समर्ज्महे, (आ) समर्जिरे RV. 8, 58, 6. असस्र्यम् 9, 97, 30. 10, 31, 3. समर्जानः अन्नातीत् P. 6, 1, 58. 1, 2, 11. Schol. VOP. 8, 77. 13, 4. स्रान्तीम्, अन्नत्तम्, अन्नम्, अन्नाष्टम्, अन्ति, अन्तमहि, स्रान्तायाम्, अस्रष्ट, अस्रत्त 3. pl. अस्र्यन् 3. pl. RV. 9, 66, 11. 87, 5. 88, 6. अस्र्यम् 1, 9, 4. 9, 62, 1. असर्जि, स्रद्यति, स्रद्यते; स्रष्टुम्, स्रष्टुः; pass. स्र्यते, स्रष्ट. 1) (aus der Hand u. s. w.) entlassen, schnellen, schleudern: ein Geschoss RV. 1, 39, 10. 66, 7. 71, 5. AV. 1, 13, 4. 8, 3, 14. MBH. 3, 16461. 16519. जामदग्याय 5, 7185. 7290. R. 2, 96, 44 (105, 43 GORR.). 5, 80, 25. RAGH. 11, 44. KATHĀS. 18, 14. BHATT. 9, 48. इन्द्रजितः शा-
लस्कन्धम् MBH. 3, 16455. पदा R. 3, 56, 50. स्रष्ट 7, 63, 20. fg. वज्रो देव-
स्रष्टः KAUC. 129. मन्त्राब्रह्मर्षिस्रष्टा धिगवाग्दण्डाः R. 2, 35, 13. — 2) aus-
gehen lassen, auswerfen, ausgiessen, entsenden: Regen RV. 1, 36, 8. 10, 98, 6. AV. 4, 13, 6. TBR. 2, 1, 1, 1. Ströme RV. 2, 11, 2. 15, 3. 4, 17, 1. 7, 18, 15. 8, 3, 10. वायुं सोमो अस्रत्त 9, 46, 2. सोमो अस्र्यन् 87, 5. 66, 11. die
Stimme u. s. w.: गिरः 1, 9, 4. 181, 7. VĀLAKH. 4, 9. इन्द्रे घोषो अस्रत्त 8, 32, 7. वि भा अकः समर्जानः पृथिव्याम् fundens 7, 8, 2. सर्जति रश्मिमांसंसा
पन्थो सूर्यय यातवे sie werfen die Messschnur aus 7, 8. 8, 32, 23. 43, 32. हो-
त्राः 82, 23. — अन्नम्: VARĀH. BRH. S. 28, 1. Z. d. d. m. G. 27, 4. श्रोत्राभ्याम् R. 1, 44, 38. वर्षम्, प्रूलवर्षम्, पुष्पवर्षाणि, शरवर्षम् MBH. 3, 12106. R. 3, 79, 4. 5, 17, 3. 38, 8. दिगुत्तरा — अन्नन्दीशितामिव बाष्पवृष्टिं हिमस्रति हैमवतीं
ससर्ज RAGH. 16, 44. नेत्रं वारि R. 4, 61, 1. RAGH. 8, 35. ÇĀK. 89, 8, v. I. BHATT.

3, 17. वाय्वयं विषम् HARIV. 4475. Spr. (II) 3565. शकृन्मूत्रम् MBH. 1, 2843. पुष्पपत्राणि पादपाः R. 2, 98, 8. धातुर्जं रेणुं शैलराजः 3, 79, 31 (med.). अ-
विभाच्यां गिरम् Spr. (II) 3586. KUMĀRAS. 2, 53. घोरान्स्वरान् R. 3, 64, 15. 6, 14, 23. अदृश्यां वाणीम् KATHĀS. 18, 217. तस्मै जयाशीः समृजे पुर-
स्तात्सर्षिभिः KUMĀRAS. 7, 47. दिशामुपात्तेषु दृष्टिम् rlochten auf 3, 69. पन्मावतीसृष्टहत् entsandt KATHĀS. 17, 153. — 3) rennen lassen: Rosse u. s. w. (vgl. lancer) RV. 4, 26, 5. 6, 32, 5. 9, 19, 6. 64, 10. सूजानो अत्यो न सर्तभिः 76, 1. अज्ञौ 97, 20. Wagen 92, 1. nach —, auf Etwas: पथ्या-
मृतस्य 95, 2. med. zulaufen, zueilen auf, s'élancer: पानि स्थानान्यसृ-
जत् धीराः VĀLAKH. 11, 6. — 4) loslassen, befreien: गव्यम् RV. 5, 34, 8. 6, 48, 11. AV. 8, 2, 7. संनक्षति, सृजति KAUC. 90. द्वारम् öffnen 29. ausge-
hen lassen, veröffentlichen; med.: संपातान् AIT. BR. 6, 18. — 5) fahren lassen, aufgeben: प्रारब्धं न सर्जति (!) PAÑĀT. 200, 21. अमृष्टसमाधि adj. DAÇAK. 67, 7. — 6) Fäden ausziehen und drehen: spinnen (eine Schnur u. s. w.): रूड्मम् TS. 2, 5, 2, 7. यथोर्णानभिः सृजते गृह्णते च MUNO. UP. 1, 1, 7. स्तुकासर्ग (absol.) सृष्टा भवति (मिखला) ist wie ein Zopf geflochten ÇĀT. BR. 3, 2, 1, 13. प्रस्रत्वि ebend. 13, 8, 1, 20. ÇĀÑRH. ÇR. 17, 2, 40. KAUC. 107. Zauber spinnen: यत्तं जामिर्धाता च सर्जति: AV. 5, 30, 5. सृजति मालां मालिकः windet einen Kranz, aber सृज्यते (असर्जि) स्रजं भक्तः für sich zu einem frommen Zweck VOP. 23, 22. P. 3, 1, 87, VĀRTI. 5. 6. DHĀTUP. 26, 69. — 7) (aus sich entlassen; vgl. सम्-द्) erschaffen, erzeugen, her-
vorbringen; med.: सृष्टीः AV. 13, 1, 25. 2, 29, 7. 3, 28, 1. 8, 5, 14. 11, 3, 53. 19, 53, 6. 10, 7, 8. पयैव संसृजे घोरम् 19, 9, 3. AIT. BR. 4, 28. प्रजाः TS. 2, 5, 2, 1. AIT. BR. 3, 36. यज्ञम् ÇĀT. BR. 1, 6, 2, 4. 2, 2, 4, 11. 8, 2, 11. लोकान् 6, 1, 2, 5. 10. पाप्मानमसृति 11, 1, 9, 9. इन्द्रासि 3, 6, 2, 8. स्रियम् 14, 9, 2, 2. AIT. UP. 1, 1. 2. TAITT. UP. 2, 6. ÇVETĀÇY. UP. 4, 5. MAITRĀUP. 2, 6. NRS. TĀP. UP. in Ind. St. 9, 72. 86. MBH. 1, 4165. HARIV. 50. 10634. R. 1, 16, 2. 6. 54, 17. MĀRK. P. 46, 17. BHĀG. P. 2, 4, 6. 3, 12, 39. 13, 42. 6, 16, 9. 9, 24, 55. PAÑKAR. 1, 14, 55. BHATT. 3, 13. मूत्रेण शकृता चैव सैन्येन समृजे नदीम् HARIV. 6444. act. NRS. TĀP. UP. in Ind. St. 9, 93. 98. MOIR, ST. 4, 299, 3 v. u. M. 1, 8. 22. 25. 32. fgg. 36. 74. 94. 7, 3. 14. 9, 315. इदं शास्त्रम् 11, 243. BHAG. 4, 7. MBH. 1, 7692. R. 1, 16, 9. 54, 20. 60, 20. fg. 2, 110, 4. Spr. (II) 807. 1696. 2297. 7163. अपरक्ता देवताः सृजति — उत्पातान् VARĀH. BRH. S. 46, 4. MĀRK. P. 16, 51. BHĀG. P. 1, 2, 30. 3, 36. 8, 16. 10, 24. 2, 9, 23. 10, 10. 3, 9, 22. 26, 5. 4, 6, 44. 7, 14 (अन्नाग्). 8, 43 (ससकर्थ). 24, 73 (सिसृहम्). VEDĀNTAS. (Allah.) No. 39. SARVADARĢANAS. 120, 22. कु-
त्सैर्नीलित्पलानां वनमिव ककुभामत्तराले सृजतः PHAB. 78, 15. स्रष्टा TAITT. UP. 2, 6. NRS. TĀP. UP. in Ind. St. 9, 72. 140. M. 1, 51. 9, 327. BHAG. 3, 10. स्रष्टुम् R. 1, 60, 22. 7, 63, 22. pass.: भूतान्यसृज्यत् VS. 14, 28. M. 1, 28. MBH. 1, 7689. सृष्टं erschaffen H. an. 2, 101. fg. MED. † 30. AV. 10, 2, 28. M. 1, 41. 5, 30. 39. 7, 35. 8, 413. 9, 96. MBH. 3, 6098. 13, 312. R. 1, 16, 7. 3, 69, 20. Spr. (II) 1038. 2227. 6527. 7164. VARĀH. BRH. S. 72, 1. KATHĀS. 39, 123. BHĀG. P. 2, 20, 11. 3, 31, 37. 4, 7, 33. 9, 8, 21. 18, 12. सृष्टवत् M. 1, 61 — 8) schaffen so v. a. herbeischaffen, verschaffen; zukommenlassen, verleihen: अन्नानां निचयं सर्वं सृजस्व शबले R. 1, 82, 24. घ्रायुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च । पञ्चैतान्यपि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः Spr. (II) 992. तावद्भवति जीवितम् । यावद्भक्ता पुरासृजत् 3467. सृजाम्यनर्थं ते Ka-
THĀS. 28, 171. समृजे यस्य — दैवतैः रसासिद्धिः RĀGA-TAR. 4, 363. मायाय-